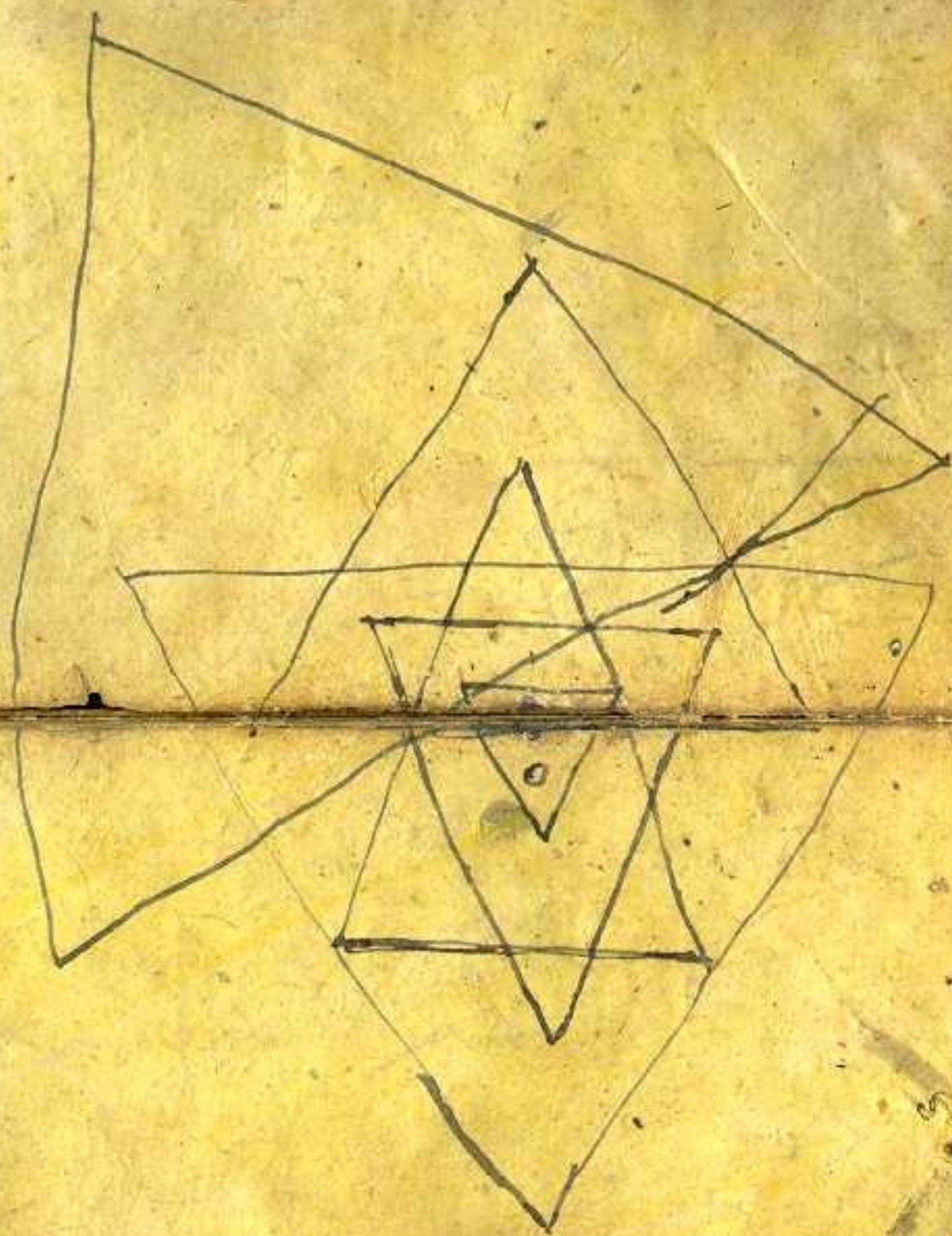


पु. ३. ३. ३. ३. ३.

केविहृदात्तमृतमस्तु सुदेव उक्ते केविहृदं विविदितामरपत्तये
पुनोवपं सक्त ल शालाविका एरहा ज्वीरनी रपरिप्ररितम
ए. सी. ३ १

2235 I
ASIA ARCHIVES

५२ १६ १७



सूत्र
नञ्
वाङ्

अग्ने

सा॥ समयान्तक॥ कूरुया इव न समयान्तक॥ ~~यथा~~ ~~यथा~~ ~~यथा~~ ॥ गिवजकि कूरु
या रीति काल॥ सदा ह्यसना॥ यथैव लि॥ यागिनी आदिना॥ मालका सी आसना॥ वाका ट
यलय नि॥ ॥ यागिनी आदिना मालका र्कः खव सवलि॥ ऊव स समय॥ राग पार्थवा
यध न व समय विधन॥ ॥ अथ च नु साधनं॥ न्यासा॥ उ० कों कों कूं नमः॥ च नु री जाम
लभय न्या॥ अग्नि स्तुतना॥ उ० कों गी कूं कों नमः॥ धम कु न मं श्रुया॥ सालिकलाः युवा कलाः
॥ इदं यवः साखवः यथैव मृग श्रुया॥ गभयती न ऊ वैव यव यव २॥ वनी गीः नवात्माः यथैव न
यूजनी॥ आवाहनं नमः॥ उ० कों कों कूं नमः॥ वाल लध म कु टा॥ च नु विविध का थया कया य
॥ ॥ अथ अर्चयामः दादु क्ति ग या वा॥ अयादिः सूर्या र्था॥ गु न नमः॥ न्यासा॥ ऊल या

नं अर्चयामः॥ रुद्र मुद्रि आत्म युजा॥ च उ० स्का वः॥ उ० नमो रुद्र वनी इत्त मलाय कों धी इव
याय यादुकी॥ निनी कटा॥ ॥ किं हि शिविका कटा यद अर्चयामः॥ यथा कटा॥ ॥
यान अर्चयामः॥ अर्चयामः॥ मूर्खी कं कट्या यदं॥ अर्चयामः॥ ॥ किं हि शिविका कटा य
कं अर्चयामः॥ ता उना॥ धन य उ मं स्का वः॥ वी उ या य॥ यथैव यदा॥ ॥ राम ल वृना॥
धन साधन॥ उ० यवी॥ मय च र्थि य नि गुं थिः सूर्यः गं म ली तः नवा वा॥ मरु या य ल य न य॥ क र्पू न
धी र्क मुः कूं कूं मूं मूं गीः सूना न क य न नः लय न य॥ क व नः रु च नः ऊ ल च नः ग म नः अर्चयामः
अर्चयामः॥ कं चः यो न य व यत्॥ अथ सतय॥ ॥ अथ सतयः नं च नः यनः साधन अ
लिः दू द॥ उ० यवी॥ उलाः किं रु लः ल वं गः रु वः व रु वः अर्चयामः॥ मय चः र्थि य नि गुं थिः

यश्चामृगवीरदवाद्दुनकाययं वचनं य॥ अथुऊ अथुऊ अथुऊ ककके कयून धननया
 वक्राय लुगा उक्तादुकापंदयक॥ दीपकय॥ गिवग कि दधसतय॥ यवसव विकृति अठ
 नकायका॥ थवसवाय॥ चवदकं वा सूर्य॥ वृत्तिकादयक विअन॥ कृगकृकृठं मठावके
 गिवागृष्टु कचका॥ वगानि वरुवकानिः लउ३ यदा यवृत्तिका॥ दीपधवस्वकानयाव
~~यय॥~~ थवथवथयसतय॥ कूरुथमन॥ गिवग किथमन॥ थवथयसतय॥ ॥
 गठायानावसथा॥ ॥ ननायादयुकात्या॥ उमवी॥ ववः थियं गुसूत्रगीः कृगवकाः धी
 खलु बाल उठामागी थाव गी धत समरगा॥ काकल खसतयः कपलागतय॥ यावयुका
 त्यायाय॥ मृयादि॥ सूर्याद्या॥ कलिकलुषकृता कत्यादि॥ वाक्का॥ सूर्ययश्च दनं धेव धीवयादा

धर्मवच॥ दिव्यजागृत्तर्क कर्मनिर्विघ्नयेवका मयया॥ सिद्धिसिद्धिय यच्छुः रुनवाहानुसावत
 शायागिन्नादिगलमं सर्वः पादाय धर्नमानम॥ काथा वनदूय॥ सवयाय॥ वाक्का विजका वापु
 वससुदुर्ग॥ काक्का लययुका गिर्ग॥ सलुजान दसंदारुः निर्मिर्तय नमामृत्तं वरुनां धेव सर्वः
 धाः मर्क कवला मूरुमी कूल सामना सिद्धार्थ अन्नया जय गृह्णती॥ सर्वतूय नमा विद्या॥ सर्वतूय न
 मा कला॥ सर्वतूय नमा गकिः गृह्णती कोर्षी कश्चवा॥ ॥ युयुका ऊन॥ थागिनी आदिन स
 गलीयूजाया रुहय॥ ॥ अयादि॥ सूर्याद्या गुनून मस्कावा॥ ~~यय॥~~ नयासा॥ जलया
 न अर्चया ययूजा॥ रुहयुद्धि॥ आत्मयूजा॥ आत्मयूग कययादुका॥ रुहयादि॥ सिद्धा सनाययादुका
 ॥ यथैयता सनाययादुका॥ कोत्याकावक्रियता सनाययादुका॥ गवा सनाययादुका॥ ध्यान॥ चत॥

उजविलेयनयादुका॥धीरवसुधनयादि॥ ॥सिंघन॥कौवीनरुसयादुका॥वीन
 योमहावीनयादि॥ ॥मारुनी॥धीसर्वजनमारुनीयादुका॥मारुनीकामसीसिद्धि
 सफायाकर्जलंगथा॥जुईरलंगदासोराग्यः॥मारुनीदृष्टिदायक॥ ॥कुंजलायवी
 नकीयादुका॥जुलायवीगंधवगीः॥पावनंगनुनिर्मित॥समदृष्टविनाशयः॥गुलानयनम
 त्रनी॥ ॥युष्मा॥कोनानाकृजुलंकालयादुका॥नानायुष्यसूगन्धनिमालयाक
 सुमादय॥सारग्यसिद्धिदंरुधः॥युष्मावारुनमूर्कमी॥वक्र॥नानावक्रविविगामीः॥सिंदूरारु
 ठा॥भरिणी॥दवानीरुमटाठां॥हाईसर्वालंकारभरिणी॥सुखनय॥युजनी॥
 जिनाकुंतेलाकाकर्षणी॥जीकांमागवडावनीकी॥ह्रींमहाकाहकाविनी॥सोसं
 यादुका॥ ॥उज नमाहगवति॥कुं॥कुं॥कार्यजांजी॥कुं॥धानरुधानरुधानामूर्खी

॥ शिंघन ॥ झांवी नरु स्यादुका ॥ वीन

श्रवणमहावीर्यादि॥

॥ मोहनी ॥ श्री सर्वजनमोहनीयादुर्गा ॥ मोहनीकामसीमिद्धि

सुप्रसादाकर्तृलिंगथाजूडैर्लचद्रामोरान्यः मारुनेदृष्टिदायकः॥

॥ कुंजशायनी

तर्कयादुर्का॥ ऊहायवीर्गंधवर्गीः पावनं गन्धुनिर्मितं॥ समदुष्टविनाशाय गृहानयनम
स्तुती॥ ॥ पुष्पा॥ स्त्रीर्नानाकृपुज्जलकालयादुर्का॥ नानापुष्पसूतानि मालयाकृ

॥युष्म॥ शैवो नानाकृपजुलं कालयादुर्का॥ नानापुष्पसूगन्धनिमालयाक

सुमादय॥ सारुथसिद्धिदरुधः पूव्याचारुनमुरुर्म॥ वक्र॥ नानावक्रविश्याम्नाः सिद्धवाव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यद्वर्णं कुरुष्वेति शङ्कितं सर्वलोकानामिह ॥ तत्र ह्यनन्तरं युजनी ॥

किं न द्रुते ला का कर्षणी जी कौ मा ग व डा व नी की ह्रीं मं हू का ह का वि धी नें सो स ४
पा द्म ५ ॥ न न मा ए ग व ति कुं कू डि का थ जां जां कुं धा न नू धा न नू धा न मू स्वी

[illegible]

नमो नमः स्वी कृष्णं किं विदुषा दूका ॥ नमो नमो रोगवेति सिद्धि कृष्णं कृष्णं

कृष्ण कल्याण सुख गने ध्याये नूधाय नूधानाम् स्त्री कि थिरे

विष्णु पादुका ॥ १७ ॥ सुमनस्य नन्दन किं नवानन्द ग्रीमलो विद्यानाञ्ज
ल्लरी द्यामा पादुका ॥ १८ ॥ सुमनस्य नन्दन किं नवानन्द ग्रीमलो विद्यानाञ्ज

श्वना द्यादू का॥ शुभं नयकवित्तु यागिना नापि ठिजा सरु जा आ
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

गङ्गा गङ्गा कूल जल सहाय जाऊँ कहि नहि ति याजिनो केव
नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव नीरुव

यन्मार्गं वलितं कुरु मम मित्रि कुरु कुरु हे स्वाहा ॥ यन्मार्गं कुरु मम

नसमयजादा। वरकं गदयतीति सिद्धवासावमादरीलाकापेकावहाधर्मयनिम्मलं स

खवनस मय जादा। वरूकं गृह्णतवीवः सिद्धानामानमादती लाकायेकौन ताथ्यय निम्मेले सु
पद पे ॥ वरूकं लाया ॥
उने लाया नुं च ला

३१

अवानयकागतां कवचकवचवाचनीं कवचविश्वकर्माणां कवचकवचवाचनीं निर्विघ्नं
याचुः॥ धृत्याग्निनीयुजा॥ त्रिदव नवात्मा श्री कटु यागिनी स या कां याय ॥
मनुजयः श्लाघा॥ अथ अथ॥ यं विलि ॥ न स न थ व र मनु थ व र ॥ स्नातु ॥ अथ याय
तु ॥ दक्षिण ॥ ॥ देव सक यागिनी ता या कं याय ॥ १ स्व गु न रू प्ति न नन्द दे
व पादू कां ॥ येन म गु न रू प्ति न नन्द देव पादू कां ॥ १ य न म स्त्री गु न्ति न नन्द देव
दू कां ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द वी ना धि य त य स्त्री त्रि गु द्वि ह द्वा
त्रिका पादू कां ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ यद्वा सना य पादू कां ॥ न न सना
य पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री
पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री

वीन धि य त य स्त्री श्री नवात्मा म देव पादू कां ॥ ३ ॥ धनं वलि ॥ यद्वा सना
य पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री
॥ यद्वा सना य पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री
पादू कां ॥ धनं वलि ॥ ॥ वे वा सना य पादू कां ॥ सिंहा सना य पा
दू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री श्री क
नृ ना थ स्त्री म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री श्री क
य पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री श्री क
लु नि य म द्वा नि दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री श्री क
३ ॥ धनं वलि ॥ यद्वा सना य पादू कां ॥ १ ॥ १ दू म् न नन्द हा कि हेन वान नन्द विना धि य त य स्त्री

सादममदहिवसर्वसिद्धिं॥आज्ञायसादविमर्लेश्वलगकिदीपं॥युवाधर्यंभरुवनपूरायाज्ञा
नाधिर्यपीववयागनित्यं॥कवासांनिरुगवान्कूजग॥॥आज्ञामर्योनिर्मलगकिरु
सं॥युवाधसवानवयादसाविर्ता॥आनाधिर्यस्यकवांनित्यं॥कवाउगभनिरुगवान्कूजग॥आ
ज्ञा॥आज्ञाधय॥सगणस्यधय॥॥तथाचवयूजायागवभा॥रुगुर्लरुनरुय॥रुगु
रुवननित्यक॥अद्वान॥आरुवननित्यक॥काषाय॥॥अद्यादिसूयार्था॥सुवनम
रुकाव॥आसा॥ऊलभुर्धयागयूजा॥रुगुधुधिशूतयूजा॥॥तथावलिदयात॥मयुना
सनाययादुका॥पीका॥कूलपूववदकनांययादुका॥दवीयूववदनाथकविलजठारावरास
वविभजकालामुखधुवनर॥२॥रुहिरुगवतुमधुलम॥अयथययनानावलिगृह॥२॥स्वाहा॥

नाथवदसमदुंरुहस्वाहा॥सांक्षयपालाययादुका॥००००वसुनाधियनययथनाभ
अवतर॥२॥चउवुजविभजकायवदसपवधुयालिमरुकाकपालारुवधयविशुक्ताटिसम
राय॥००००वरुगवतु॥००००ववयुलः॥यथापनयननानावलिगृह॥२॥ममविश्वीकूदनाकांकां
कूक॥००००रुहस्वाहा॥॥यतासाययादुका॥नयोंथागिनीश्यायादुका॥नयकवि
यागिनीनाखवनी॥रुवनी॥क्षय्याः॥सहजाः॥यागजाः॥गर्जजाः॥कूलजाः॥संदाहजाः॥यकवि
नया॥गिनीनाखवनी॥रुवनी॥गभवनी॥प्रकाशनी॥द्वशनी॥शुशनी॥चउधयकेनवाकनी
००००यथयनयनीः॥नानावलिगृह॥२॥ममसिद्धिकूवकुहूरुहस्वाहा॥॥नयगासा
ययादुका॥००००श्रीसिद्धिचामुधुवनीयादुका॥धनेवलि॥॥मृगासनाययादुका॥

उगमंगीगुंमोधीकुलगदाध्वनायवादुर्का॥धर्मवलि॥आवाहनादि॥स्वस्वमुद्रा॥श्रवम
 कुर्नजाय॥स्तव॥गोमयापूर्यपूर्यादि॥विष्णुयथादि॥नमःछीनाथाय॥नमःछीसि
 दिनाथायनम॥नमःछीकुजगनाथायनमानमः॥॥अर्चयानाककनचनस
 कलहाया॥मायगीन॥उजकुटिकायविद्वहकुलदीपायवीमहः॥गुनाकुटियथाद
 याग॥३॥गनामहायपूजन॥आववगकयथादि॥६॥तदूपविपूर्ववत॥आथनादि
 छननर्त॥उजआवकासनायवादुर्का॥स्वाधिरुवकासनायवादुर्का॥विमलियुन
 वकासनायवादुर्का॥उज्जुनाहवकासनायवादुर्का॥उज्जुविद्विचकासनायवादु
 र्का॥उज्जुशुलासनायवादुर्का॥तदूपविष्णुयथाववकहयागीतमुद्राकमलुलायदंनि

यदेनकमलासनायवादुर्का॥महायागसनायवादुर्का॥अर्चनसंयुक्त॥अर्चयानावितकनाः
 यनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥लेहलिकगविष्णुविक्रयायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥लेहलिक
 लाकलायनमः॥लेहलिककलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥
 ॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥
 समालिखत॥वकायविष्णुयथाव॥कीर्तययकलायनमः॥खंवेतायनकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥
 लायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥
 म्नाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥
 टंटायालिनाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥अर्चयानाकलायनमः॥

जगन्नादि॥ अथ जलचलपूजनं॥ मलियूत्रकचकायुक्ता जलचलीविष्णुदवता॥ स्यामवर्णमहाभ
 र्जः॥ चतुर्भुजः॥ मलियूत्रकचकासनायपादुका॥ वृं॥ महाजलचलपादुका॥ ध्यान॥ क
 षुदृष्टिमर्सकार्गः॥ मीनवक्रायचितीश्वरिहस्ताय॥ मलिवर्तः॥ गीषयाप्रवृतामृता॥ मनि
 यूत्रकचकाः॥ सकरासनसंस्त्रिगा॥ ध्यात्वात्तुर्वदर्वः॥ वृद्धिर्लोमसूत्रधिर्य॥ ध्यानं॥ ध्यानं॥ ध्यानं॥ ध्यानं॥
 कांकां॥ इति॥ गीषवर्णविलोलीलुंलुं॥ मलियूत्रकलाकिनीयमहायूत्रासं॥ ध्यात्वात्तुर्वदर्वः॥ ध्यानं॥ ध्यानं॥ ध्यानं॥
 दृका॥ नकमलुलसं॥ नककुञ्जि॥ यतिस्त्रि॥ नकलानयकातार्यः॥ कृष्णलीनमाशुत॥
 जलैनागलाकलाकलागगवगमिनीनागलाक॥ अमृतसंवाविहीनामनन्ददवनागमवाचका
 विमलदकाटियागिनीपादुका॥ अवाचका॥ कौं॥ सर्वाकर्षणीमुद्रादशयत्॥ त्रैलोक्येश्वरश्चाह॥

स्ताय॥ समुद्रारुवसीजातः॥ यद्विषयापनासनी॥ सिद्धिसोराग्यदरुधविष्णुवर्णनमाशुता॥ अथ
 गीषादि॥ ॥ अथ सखत्रपूजनं॥ ॥ गणेशनीत्याविष्णुर्नवः॥ गणेशवक्रदवता॥ पीतवर्ण
 महाभर्जः॥ वक्रमलुलपूजनं॥ स्वाविष्णुवक्रासनायपादुका॥ वृं॥ महासिद्धिर्गणेशमूर्त्यनम
 ॥ ध्यानं॥ नकवर्णमहाभर्जः॥ सावित्रकविलावनी॥ स्वप्नखदाम॥ रुक्मेश्वरमहायागधृतालय
 ॥ नवगणेशपूजुधनधनधनधन॥ गियाअहलिअ॥ कुं॥ कुट्टिकाकलदीपायेकां॥ मूयदाधिवैप्री
 नैवृं॥ स्वाविष्णुनवाकिनीयधीयूनी॥ अमृतगुह्यासानन्ददवपादुका॥ ॥ अ॥ जायूकादिसंयुक्त
 ॥ मिडाया॥ वादियूत्रिनी॥ अतिवक्रविनिष्कार्कः॥ कृष्णलीनमाशुत॥ ॥ अ॥ नत्रयवनलाक
 रागगवगमिनीयवनलाक॥ अमृतसंवाविहीनयवनानन्ददवयवनमाशुता॥ अ॥ जलदकाटिः

॥मूथसर्वचतुसृजनी॥आनाथमग्निका॥ननु॥सर्वचतुसर्वदवता॥सर्ववर्ष

लीनर्मस्तुता॥ त्वं तत्र स्वर्गलाकारागगर्भमित्री स्वर्गलाकारमृतसंवाविहीः स्वर्गदन्ददव
स्वर्गमवावतीसलदकाटिसिद्धिवगीसलदकाटिसिद्धिवगीसलदकाटियागिनीयादुर्का॥ सु
यादु॥ मरुतामृदादगयत॥ प॥ येअयहानयूजा॥ त्वं वलिगृह्णश्वाहा॥ साय॥ सर्ववपुयावन
यूयं पविर्नयदुःसवने॥ ॐ स्वसिद्धिक्रियासिद्धिः सर्वसर्वनमास्तुत॥ सुगर्गवादि॥ ५ ॥
अथ आनन्दवपुजनी॥ आस्तावागृहाकादवः शिलाआनन्दर्कवपुः॥ कालवपुः कृष्णवपुः अन्ननायि
कयूजनी॥ कवक्केगिलातयाः सर्वमुखपुर्जनी॥ मरुतादवमिदयाकाः ॥ यगीयवपुजनी
॥ आस्तासनाययादुर्का॥ खूर्ककाविकादेवीयादुर्का॥ धमन॥ नीलाअन्ननिर्दरः चउर्वाकृषि
लावनीखर्कुरुटकवपुर्वः पूरुपात्रकवपुः अलिर्मासनानित्यः रुववाविविताविद्या॥

ॐ नमः शिवाय
ॐ नमः शिवाय

आसावकसिर्द्वैकालिकालविनासनी॥ॐ नमो नमः॥ अकिं विविक्ता काल
 येकं त्रैलोक्यादिकं त्रैलोक्यं ॥ आसावकसिर्द्वैकालिकालविनासनी॥ आसा
 मूर्तिनिवाकावै॥ ॐ कार्त्तिकेयि विमलसिद्धिं ॥ निष्कर्षनिर्मलं गूर्यं कृष्णलीगं नमामुभय ॥
 कालिकासिमलाकालिः मासं नितराजनी कोटो कृतं कृतं मूर्त्तिद्वयः मीमांस्यन्तु सत्र
 यादु॥ आसावक॥ मला मुद्रायानिमुद्रा॥ सुवर्लिगृह २ स्वाहा॥ स्वाहा॥ नमस्तु काविकाद्वय स
 अनिर्वाणदायकी आविष्मकरयथा कालमृच्छरुयायहं॥ आयुर्वृक्षसोराग्यं लक्ष्मीं
 यर्हिदायकी॥ कालिमरुतनालीनी नूनन्दवन्माधिता॥ यो यो यं यो ललाटा कलाययं दैः
 कोलीग्ननन्दवयादुका॥ मलायाजसत्वाया॥ ३ ॥ ॥ वृजुधजुजुजुजुनी॥ अ

लुज्जपाकर्जद्वयः रुतायकेयूर्युद्धति कायविश्वविश्वार्थं सर्वज्ञापविभावनी॥ निवर्त्तनक
 मजा सनाययादुका॥ अतः॥ अद्यकाठिमलातजाः विनयावचरुद्धा॥ दूर्ययावयुताद्वय
 ववदाकमवारुया॥ वमालकावद्वाना सोराग्यसिद्धिकामदाः गीकामसातकाद्वयः वमाल
 किनहोकिं मासुत॥ अत्रिअलि३॥ मूर्त्तिं सर्वगत्वायकां ममसातकाद्वययादुका॥ तस्मादावादि
 मूर्त्तिं मूर्त्तिं ववसमिर्व॥ अत्रिअर्कं ॥ ॐ कर्जद्वयकृष्णलीगं नमामुभय॥ नमोवावकां सोराग्य
 तत्वाविकावकि यागकियवायलिवा वलिवाकाद्वययादुका॥ आसावकमुद्रा॥ सुवर्लिगृह २
 स्वाहा॥ स्वाहा॥ मूर्त्तिं गामसाद्वयः सर्वसंममसातकावकी वागसाकारुयादीनिः सर्वसिद्धिदा
 यकी॥ अत्रिअदि॥ ॥ स्तुतजवामसा॥ अत्रिअकद्वयनी॥ गूर्यातीता सनाययादुका॥ अ

ॐ गुह्यं कालिकायै नमः ॥ महाकाल उवाच ॥ अविद्यामिताकालशक्तिश्चरुपाप्रतिवृत्तश्चिन्मात्रमं
 नैकमूर्तिः। गुणातीतनिर्द्वन्द्वो धौकशम्यात्वेमेकापुरवृत्तिरुद्देशासिद्धा ॥ १ ॥ अमोघकृतित्वापेक्षकात्ति
 कत्वादलक्ष्यागमत्वादशेषाकरत्वात् ॥ प्रपञ्चालयत्वादनारंभकत्वात्वेमेका ॥ २ ॥ असाधारणत्वा
 दसंबन्धकत्वादभिन्नाश्रयात्वादनाकारकत्वात् ॥ अविद्यात्मकत्वादनाग्रत्वेकत्वात्वेमेका ॥ ३ ॥
 यदा नैव धातानविष्णुन्नरुडानकालोनवायं वभूता निर्मला ॥ तदाकारिणी भूतस
 नैकमूर्तिरिव मेका ॥ ४ ॥ नमीमांसकानैवकाणादतर्कानसंख्या न योगानवेदान्तव
 दा ॥ न देवा विदुस्तनिराकारभावमेका ॥ ५ ॥ न ते नाम शोत्रे न ते जन्म मृत्यु न ते धाम
 चिन्ते न ते दुष्प्रसौख्ये ॥ न ते मित्रशत्रुजने वन्धमोक्षौ च मेका ॥ ६ ॥ न बालानवतं वयस्य न वृद्धानव
 स्त्री न मण्डपुमा नैव च त्वं ॥ न च त्वं सुरेना सुरेनो नरो वा त्वमेका ॥ ७ ॥ जलेशीतरत्वं सुखौघाहकत्वं विधौ नि

[illegible][illegible]

अष्टादशरुद्रादवीः दिव्यकन्यामनाममालाकानसनिरादवीः यद्वात्रागसमयका अष्टादश
 रुद्रादवीः बलालीका नरुषिता सोमयययवादवीः विनयानवयोवना खड्गविगुलव
 दक्षः डिभिर्मममलंतथागदायद्ववर्जयार्जः दक्षिणः विगजिता ॥ रुतकीकुलव्यष्टव ॥
 मधुखडा मकु मया ॥ नीलात्यवरुयविद्युः वामरुसविद्यविटी ॥ दिव्यवतकताटाय रुमा
 रुवरा रुषिः स्वगवद्भासनासीना वदयद्भासनक्तिर् एवंप मरुदवीः वावुणी दिव्यवृषिटी
 ॥ अथा वाकु नखिया ॥ ३३ ॥ द्यौः दीकुलकु मरुका वि काय अलि मूरुयया इका ॥ साव ॥ आसा
 कामाक्षी नृपवतियविक ॥ यावक्क निर्वार्य वान्धः वका सिद्धववर्धुः पवम मृतमयः सर्वः
 दवधियर्षः रुद्रादवीः ॥ सुवववनमिताः नाखितादवदवीः सालक्रादिशरुसायधम

गिगि वसाः पादवली कुजगहा ॥ अखलकलंगमनाथं द्यादि ॥ अखगंधादि ॥ धनयवयूजा ॥
 अथवतीलीया गिनी वलिविय ॥ दायकावद्वपूसा ॥ जनेच अयवलिगृह १ स्वाहा ॥ मोंच अय
 नमः ॥ वलिगृह १ स्वाहा ॥ रुंमरुनासायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ गं सुमूवायनमः वलिगृहः
 रु १ स्वाहा ॥ वंदुर्मूवायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ गिं गिवलायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ कुं व
 वलीनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ कूयथमायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ डिथो वायनमः वलिगृह
 १ स्वाहा ॥ किंसा मायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ वेंरुमायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ कौं मरुवला
 यनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ कौं जयायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ कूं विजयायनमः वलिगृह १
 स्वाहा ॥ द्यौं अजितायनमः वलिगृह १ स्वाहा ॥ वेंसंरु विः वलिगृह १ स्वाहा ॥ अं विवकहाथ

[illegible]

मन्त्रयुजा॥यनिसिन्धु॥गिदवशीत्यादि॥

॥ अक्षु न विसर्जन ॥ दीयतु मनी ॥ ॥ ॥ संवर्जन

॥ ऊर्ध्वं रुमति गादहः भक्ता कृतवर्ण्य ॥ वामरु स्थायविरिह्याः दायं गृह्णतु न सदा ॥ ददातु द
ददवयुः यागिनी गलपूर्वकी भन गृह्णतु गृह्णाति ॥ दक्षकं मवना सनी कालववृदीयनीः आ
गततय ॥ यागिनी आदिनवा नजन विर्यं रुय ॥ वाक् ॥ विग्रहं स आ वरिह स आः सर्वा रासा नि
नामयी सामयै कृयय रुनीः सर्वपायविना सनी अनादिवा भसंकारैः सुज्ञानतिमिना यरु ॥ रु
कि मुक्तिं यददीयै रुक्या मिमदादिती ॥ वामरु कल्यः मान सद्य ॥ ऊयसव ॥ विग्रहं उं अ
मुगं ॥ मुमुना रुवायव रुकुक्ति नक्रां क्रीं रुद्र स्वाहा ॥ दीयं रुद्रा ॥ माह रुद्रा विरु रुद्रा वि
वक्र रुद्रा गम प्रवयवा दीयरु रुद्रा म प्रदाः सर्वपायं प्रदा स्याती ॥ आ हा आ हा यय ॥ या सय न ॥

मध्वमीरुलसीयूनं ४

॥ खचत्रयासनी ॥ त्रैलोक्यमहासमयसंरुर्तः ^{कार्त्तिक} दिव्यमलायकारुर्वः नवद्वयसुमायुक्तः क
 र्त्तिक ^{१५} त्रैलोक्यमहासमयसंरुर्तः ^{१५} दिव्यमलायकारुर्वः नवद्वयसुमायुक्तः क

॥ रुचययासनं ॥ निर्माल्यानिर्मलदहः पविर्दहः ॥ धनीषमादाहः ॥ कर्षी ।
 कृत्तिकर्त्तृनमाश्रुतः ॥ मृधेयनूनिवासानः ॥ रूक्षीमृगमयवा ॥ रुचयतसमाहूताः ॥ रुचयैजम्भामुत्र
 ता ॥ ॥ जलचययासनं ॥ जलमयीमीमं ॥ हामिमीं ॥ कर्षीकैर्नर्त्तननीमप्युकाभ्युदिवीकृ

द्विकर्त्तृनमाश्रुत॥सप्तकद्वयगौरवः शिष्यसूर्यसमैश्वर्यक॥जलचरतसमादृष्ट्वा॥जलचरैर्जन्ममुच्यते॥
॥॥॥
॥॥॥
द्विकर्त्तृनमाश्रुत॥लघुयादिविषयाण्युक्तः सव्यलक्ष्णविशेषः॥॥॥
॥॥॥

दसिद्ध २

॥ अ॥ या रा भू वा मूर्ध्व कृत्वा ॥ न कान क ॥ भू ध्व यूर्वा ॥ बलि वि स र्ज न ॥ स र्ज न मूढा ॥ या मि
 न्ना दि ॥ मूर्त्त का ना दि ॥ भू व त न टा वा क ॥ य द्द र्क र्ज न वी च र्क ॥ सर्व व र्त्तु द्वि जा य त ॥ नि व र्त्तु र्क
 न वी च र्क ॥ सर्व व र्त्तु पृथ क् पृथ क् ॥ वी न च क स मी ना य ॥ सर्व व र्त्तु नै जा य त ॥ च का न च ग
 त नै व ॥ सर्व व र्त्तु ४ पृथ क् पृथ क् ॥ वी न जन स म र्क ॥ मूढा ला य न या दा व वि क्रा दू ना ॥ वी न ॥
 जन स क व र्क द वा र्ध न या दा ॥ स्नान क द व स क दू य ॥ वी न जन या ब लि ॥ भू ध्व य ॥ नै सू य
 द श दा या व ग य ॥ वी न रा अ ॥ ब लि वि य त र्क न ॥ यी ति थ ता ॥ नि व र्ग कि कू म्प या ॥ भू लि स
 म य का या व दू य ॥ त र्क न ॥ भू वि ना सा ॥ ना वा य ॥ व य दा य ॥ र्क व व लि या ॥ भू ग टा वा ॥ क र्क
 स र्क य ॥ ॥ त ना क र्क य र्ज न ॥ सु न न म स्का न ॥ न्या स ॥ लि लि भू क्रा य र्दू ॥

क व सा ध र्क ॥ ई म र्क ग ष्ठ वा य क टि का य न म ॥ ई म र्क ग ष्ठ वा य भू ना मि का य न म ॥ त्र म र्क ग
 ष्ठ वा य स र्क मा य न म ॥ ई म र्क ग ष्ठ वा य त र्क न्या य न म ॥ ई म र्क ग ष्ठ वा य भू म्प द्या य न म ॥ ई हि
 लि भू क्रा य र्दू ॥ ऊ ल ॥ भू ध्व य ॥ रू त गु धि ॥ भू त म्पू ज ॥ एी र्क र्क आ वा रु न ॥ पू र्क न वि द व ॥ उ
 भू ध्वा वा य न म ॥ रू य मा य दा दू की ॥ नो दा य दा दू की ॥ नि का ॥ ॥ नै व र्क म र्क ग ष्ठ वी दा दू की ॥ न ल मा
 र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ वि न म र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ द्या न म र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ च द मा
 र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ वी न म र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ उ य म र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ उ द्दि द मा
 र्क ग ष्ठ वी द वी दा दू की ॥ भू द्ध य म्पू ज ॥ ॥ रू व र्क न म ॥ वि ग व र्क न म ॥ ना द स र्क
 न म ॥ नि वा य न म ॥ स्नाना य न म ॥ गृ द्या य न म ॥ उ ल्का य न म ॥ द्या ल य ॥ रू रू रू रू रू य वा ग

॥संनिकृष्ट्याविधिविदुषान्॥बलि

॥ यजमानस्वस्तिकसमय ॥ नृवद्धनादि

॥ कामजाग ॥ कामाविवि सर्जः

ना॥ ७॥ इति वंद्यावता ब्रह्मी कृष्णनाथविप्रचिंतुमुद्रिकाभूद्वनागिरीयजामगतिधिंसमाप्ता ॥ ॥

॥ वायुः आरुमगः रजः अतिवलि सहितं कांशया नृदयश्च दत्वा
स्वच्छं नृमूलं सकलकालं नृनः सर्वं धीकृजः ॥ अस्याः जागं यसनं इति नृयद्वयं धानपा
यंति हृत्य आयुः ४३ धीकानि लक्ष्मीं विन नृदयं नृनः ॥ ॥ अदिमनः
सालया मध्यमं नृकीलिता ॥ अदिमनः साक्षिना नृनः विद्या नृसिद्धिनि ॥ वलिदो नृनः संतुष्टः ४३ नृध्वं
वलिदवता ४३ यथा सूर्यं विदुः नृद्वयं अयिनः यथा सूर्यः ॥ वदुकायाः ४३ सूर्याः ४३ सर्वः सर्वसिद्धिविधः

यिनः समस्तानि ४ यष्टिः उष्टि वायुतदयसा दतः ॥ नत्वा धी वज्रवादी मन्त्रमर्हति जितः ॥
अथ क्ता वने दारी मा अक्षि सिद्धि व प्रयदा ॥ एवं काल समाशीर्णं सुरुजानन्द वृत्तिनी प्रह्लाद
ज्ञानदराहं नमस्कृष्टी वज्रया गिनी ॥ अष्टादश मन्त्रा विविध कृत्वा लि सिंहासनी प्रय
या लि मनाहवांगी ॥ यीन सनी विविध कृत्वा लि सा दयादा रागव तीजगती हि रुड ॥
॥ कृष्ण ॥ कृष्ण नार्थ विउवन नमिर्त डरु प्ररु वरु रूतानां रूत प्ररु किलि किलि तत्र ववाष्ट्र कृता पव
रु ॥ सर्वहं सर्वसारं सकल गुण निधिं सर्वसकल यव कृष्णं धेवं कृत्वा लि जयति रुय रुन नो मिर्मक
प्रतिवर्त्त ॥ अं क व नी या ॥ ॥ यासा विज्ञान रूता कि निलय जतनी प्रक सिद्ध प्रवर्त्त का ना गिः
य स रूत का स्वग लय विवृता वाल वृत्ति य ना सा ॥ सा वृता वाल मूर्ति ४ मृत स गति धरा ज्ञान

प्रकांग रांग म कौं धी को मा विदवी रुय विविध रु ना पा उवां क्ता य सना ॥ वा प्रकृ मा विद्या ॥
॥ ॥ या लु ली नी ॥ धू मारुं दी फ दहं ग विरु कृ रू ज टा ती नि भव क पालं रु रु ख ज्ञं
वं कलि रु इ पु नि स्व धृ ति ती कृ गूलं क पालं ॥ वका न्क म ह्य मां सु स म न स विविध
भा दि न धं न स रूता मा तंगी रु व वगी स्व ग ल य विवृ तं नो मि ड छि रु ना थ ॥
रूता रु ॥ न भानि मा ल्य वा गि न्यै मा तंगी प म म व नी ॥ य सा दया व म ना निं उ छि
रूता य न मा मु न ॥ ॥ ॐ नमः श्री सिद्धि पदा ये ॥ वंद श्री कृ रू ना र्थं सु व व न मि
तं ॥ ध्व त व रू वि न रू मा ह रू पी ० म ॥ य थ म म नू दि नं पु ज य क्ता र्थ रु मा ४ य रू
मा ला रु द रु क रु क म ल ध रं मा द रुं पा ग वा म सिं रु रुं द व य रू व रु वि ध रु

[illegible]

खट्वांगस्तथा॥ विष्णुलं वन्दे धेव दधनिदधवामया॥ ४॥ सिंहवर्मया विधाना हाठलीकालम
दिता॥ उद्धमद्यनस्तथैव वलुकापालिनीमूर्त्तिं॥ तयहमयस्यार्द्धं पूर्णं नीतिव्यविष्टं
॥ नीलात्यत्रैदलारासा रुद्रसिद्धिदुयद्वि॥ ७॥ कूंकुमाद्रु निरंकाशं महालक्ष्मीमुवामर्कं॥
उमारुगवतीस्यामायधिभक्त्यवस्थिता॥ मूर्द्धांगीकनयस्वार्त्तिं यमनू मरुवामया॥ निवामा
लीयलीतांगी मंगनद्वयमत्सना॥ मूर्त्तिं दीवामन गालीं जू सरवास्वत धावलीं॥ जीवायस्ति
महायुद्धं विष्णुस्वत समन्वितं कालाजि नूद्रामाचक्रं हाठवन यवस्थिता॥ संक ४४ नी मि
मां धाय सर्व कामार्थ सिद्धिदा॥ संक ४४ नी या॥ ॥ कर्णं नां वक्तन नैवमधूना मृदुकाताः
स्वच्छया सत्यकृष्ण किमवमारु मूर्त्तिं मध्यमयस्याननां व्याकृष्टिक ४५ का सितां सिद्धि मूर्त्तिं

ॐ समस्तं जगत् माताय स्यात् ॥ मविस्मययदं यायात्मवः कणावः ॥ यं पुया ॥ १ ॥ अष्टौ श्रेयवः
मा रुका गणगुप्ते ॥ धीकृत्वा लब्ध्वा मां सा ह्यविलासिनी नूधियया कादंबरीया धिर्या ॥ कीर्ति
निरुक्तक विप्रिमथ नि यिक्तामलियव्रिती तातायतयि ॥ यरुत स्वगलभया भव्यरीया उव
॥ यताया ॥ २ ॥ धीकां क्रियममव्यरी रुगवती सिंहा सिनी ॥ लीनी या उष्ट्रि सया गिनी
यपिव नायं वा स ऊगान्विता ॥ नानाव ॥ धजा विविगुमि च सा मालावली ली विनी ॥ स
यं वाचू ॥ यी ० कवि वशिना या या सदा रुकि मान् ॥ पश्चिमया ॥ ३ ॥

